

श्री सम्बद्धाः

आमां श्रावेला दश श्रध्ययनो सद्याय करवा योग जाणी

क्षामति शुद्र करी ठपानी मसिक् करनार यादा। साइ ठगनलाख शाह ठे लीकाजटनी पोळ, सुठ छमदासट

(आयुक्ति प्रीजी) सत्रत राण्ड्य-मने रूएका

Ahredabad-Shri Jain Printing Press

किमत वे घानाः



्श्री छुटक अध्ययनो.

ष्प्रथ श्री दशवेकािबक सृत्रनुं पदेखुं, बीजुं, त्रीजुं ष्प्रने चोथुं तथा उत्तराध्ययन सूत्रनुं पदेखुं, बीजुं, त्रीजुं ष्प्रने चोथुं, ए खारे

अध्ययनो मूखपाठे प्रारंजः

(अतुपुरत्वम्) धन्मो मगल–मुक्तिकं, व्यहिंसा संजमो तवो ॥ नेवानि वं सम्मानि जन्म अस्मे स्वया सालो ॥

IIŞII

nen

देवावि तं नमंसति, जस्स धम्मे सया मणे ॥१॥ जहा छुमस्स पुष्फेषु, ज्ञमरो ब्यावियई रसं॥ न य पुष्फं किलामेई, सो य पीणेइ ब्यप्यं ॥२॥

एमे ए समणा मुत्ता, जे लोए सित साहुणो ॥ विह्ममाव पुफ्तेसु, दाण जत्त्तेसणे रया

वयं च वित्तिं सम्रामो, न य कोइ जवहन्मई॥ श्रहागमेष्ठ रीयते, पुष्केष्ठ ज्ञमरा जहा महुकार समा बुद्धा, जे जवंति श्राणिस्तिया॥ नाणार्पिक रया दता, तेण बुचित साहुणो चि वेमि वृटक अध्ययनोः

इति डुम्मपुष्फिय नामं परम श्रञ्जयण सम्मत्त । कहं तु कुड़ता सामझ, जो कामे न निवारए ॥

(২)

पएपए विसीयतो, सकप्पस्त यसगत

वत्र मध-मलकार, इजिने संयक्षाक्षि य ॥

श्राञ्च जे न जुजति, न से चाइ ति बुचई ॥ १। ने य कते पिए जीए, बन्ने विध्विष्ठ कुन्ने ॥ साहीणे चयई जोए से हु चाइ कि नुबई

दशवैकासिकंत्र त्रीजं अध्ययनः (अनुपुरूरतम्) ' पखंदे जलियं जोइं, धूमकेडं द्वरासयं ॥ नेइंति वंतय जुनं, कुले जाया अगधरो ॥६॥ धिरह ते उजसोकामी, जो त जीविय कारणा ॥ वंतं इइसि खावेनं, सेयं ते मरणं जवे ॥॥॥ खहं च जोगरायस्स, तं च ऽसि खंधगविष्हिणो ॥ मा कुले गंधणा होमो, संजम निहुर्ग चर ॥ण। जइ तं काहिसि नाव, जा जा दिग्रसि नारिने॥ वाया विद्धोव इसो, अिष्ठश्रप्या प्रविस्सिस ॥ए॥ तीसे सा वयणं सोचा, संजयाए सुनासियं ॥ श्रकुसेण जहा नागो, धम्मे सं पिनवाइर्छ ॥१०॥ एवं करति संबुद्धा, पंकिया पवियस्कणा ॥ विणियहति जोगेसु, जहा से पुरिसोत्तमो ति बेमिर्१ इति सामत्रपुविय नामं वियं श्रद्ययणं सम्मर्त्त ॥ १ ॥ सजमे सुविश्रपाण, विष्य मुद्राण ताइण ॥ तेसि-मय-मणाइझं, निग्गंथाण महेसिलं ॥१॥ जदेसियं कीयगम, नियाग श्रनिहमाणि ये ॥ें रायजेते सिणाणे या गध मही य

त्रुटक अध्ययनोः (২) नाणापिंक रया दंता, तेण दुर्चति साहुणो चि वेमि ॥५॥ इति जुम्मपुष्पिय नामं पढम अञ्चयणं सम्मत्त ॥१॥ कहं नु कुज़ा सामज्ञं, जो कामे न निवारए ॥ पएपए विसीयतो, संकप्पस्स वसगर् वञ्च गंध-मलकार, इञ्चितं सवणाणि य ॥ अबदा जेन जुजति, न से चाह ति बुचई ॥ १॥ जे य कते विए जोए, खडें विष्पिष्ठ कुउई ॥ साहीणे चयर्ड जोए से हु चाइ ति बुचई ॥३॥ (काच्यम्) समाइ पेहाइ परिवयती सिया मणो निस्सरई वहिन्दा ॥

न सा मह नोवि श्रहित तीते, इन्चेव तार्ग विशिष्ट्ज रागं ॥ ४॥ श्रायावया ही चय सोगमञ्ज, कामे कमाही कमिय ख इन्क ॥

आयावया ही चय सोममञ्ज, कामे कमाही कमिय खु दुस्क ॥ विदाहि दोस विशिएका राग, एवं सुद्दी होहिसि सवराए ॥ ॥

दशकेंकाविकतु त्रीतुं व्यध्ययन-' (अतुपुरस्य)

पखंदे जिलयं जोई, धूमकेछं हुरासयं ॥ नेइति वंतय जुनं, कुले जाया अगध्ये ॥६॥ धिरहु ते ऽजसोकामी, जो त जीविय कारणा ॥ वंतं इहासि व्यावेन, सेयं ते मरण जवे ॥॥ श्रहं च जोगरायस्त, तं च ऽति श्रंधगविष्हणो ॥ मा कुले गधणा होमो, सजमं निहुर्र चर ॥ण॥ जइ तं काहिसि जाव, जा जा दिश्रसि नारिष्ठं ॥ वाया विद्धोव हमो, छाठिछप्या चिवस्तिस ॥॥॥ तीसे सा वयणं सोचा, संजयाए सुनासिय ॥ श्रक्तसेण जहा नागो, धम्मे सं पिनवाइडं ॥१०॥ एवं करति सैंबुद्धा, पंक्तिया पवियक्कणा ॥ विणियहति जोगेसु, जहा से पुरिसोनमो नि वेमिश् इति सामनपुरिय नामं वियं श्रद्ययणं सम्मत्तं ॥ २ ॥ संजमे सुविश्रपाण, विष्य मुकाल ताइण ॥ तेसि-मय-मणाञ्चं, निग्गंथाणं महेसिणं ॥१॥ **इदे**सियं कीयगर्न, नियाग श्रनिहमाणि य ॥ रायनते सिषाणे य, गध मह्ने य वीयणे ॥१॥

वृदक अध्ययनोः (B) संनिही गिहिमचे या रायपिंने कि-मिछए॥ (कॉव्यम्)

संवाहण देत ×पहोवणा य, संपुछण देह पक्षीयणा या। (अनुप्रत्रचम्)

श्राचय य नाखिए, उत्तरस य घाराजाए, तेगिछं ७वाहणा पाप, समारंत्रं च जोइणो ॥॥॥ तिज्ञायर विनं च, ज्ञासदी पक्षियंकए ॥

गिहंतर निसिक्जाए, गायस्सुवटणाणि य ॥५॥ गिहिलो वेयाविषय, जाइ खाजीववित्या ॥ तना-निवृत्र जोइन, छातर स्तरणाणि य ॥६॥

मृत्वप सिगंबेरे य, उद्य खने अनिहुने ॥ करें मूले य सचित्ते, फले बीए य आमए ॥॥॥ सोवच्छे सिंधवेछोणे, रोमाछोणे य स्थामए ॥ सामुद्दे पंछुखारे य, कालाखोणे य व्यामप् ॥७॥

धविषस्ति वमणे य. वश्चिकम्म विरेयणे ॥ अजपो दतवपो य. गायाज्ञम विज्ञसपो ॥ए॥ सब- मेय--मणाइन्न, निग्गंथाण महेसिएं॥ . य जुत्ताण, लहुत्रूय विद्वारिणं ॥१०॥

पाठातरे अपहोयणा, पाठातरे अपाहणा

(以) दशवैकाक्षिकतुं चोश्चं अध्ययनः पंचासव परिव्राया, तिग्रता वसु संजया पंच निग्गहणा धीरा, निग्गंथा जज्जुदंसिणो ॥११॥ आयावयंति गिम्हेसु, हेमंतेसु अवाजना ॥ वासासु पिनसंखीणा, संजया सुसमाहिया ારશા परीसह रिज दंता, श्रुयमोहा जिइदिया ॥ सब जुक्त पहीणठा पक्तमंति महेसिणो शश्ह्या इकराइयं करित्ताण, इस्सहाइ सहितु य ॥ के इन्न देवलोस, केइ सिद्यंति नीरया HRYH

खिवता पुर कम्माइं, संजमेण तवेण य ॥ सिद्धिमग्ग-मणुपत्ता, ताइली परिनिब्बुके ति वेमिर्ध

इतिखुमगतिश्रायारकदा नाम तर्य श्रद्यपणं सम्मर्तः

सुयं मे आउस तेणं जगवया एव-मकायं ॥ इह खु उद्धीविषया नामऽद्ययण, समर्पेणं चगवया महावीरेणं, कासवेणं पवेइया, सु अस्काया, सु पत्रचा, सेयं मे श्रहिज्जिनं, श्रद्ययणं धम्म पन्नति ॥ १॥ 🏾

कयरा खल्ल सा ठङ्कीविषया नामध्ययणं, समर्पेणं जगवया महावीरेणं, कासवेणं पवेश्या, स

तृटक अध्ययनो, सु पन्नता, सेयं मे ऋहिज्जिल ऋद्ययण धम्म पत्रति ।२।

(ધ)

सु पत्रचा, सेयं में छहि जिन्नं खवयणं धम्म पत्रति॥ त जहा-पुढविकाइया रे. खाउकाइया २, तेउकाइया ३, वाजकाइया ४, वणस्त्रकाञ्चा ५, तस्तकाञ्चा ६॥ पुढिव चित्तमंत-मरकाया, अखेग जीवा, युढो सचा, **अन्न सम्म परिलाएल ॥ १ ॥** थाउचित्तमत-मकाया, अणेग नीवा पुढो सत्ता,

इमा खबु सा ठङ्कीविषया नामऽषयण, समरोपं जगवया महावीरेखं, कासवेखं ववेइया, सु श्रकायां,

श्रमञ्च सञ्च परिषापण ॥ य ॥ तेल चित्तमत-मरकाया, अलोग जीवा, पुढ़ो सत्ता

क्षत्रज्ञ सञ्च परिवादवा ॥ ३ ॥

वाज चित्रमत-मकाया, श्रणेग जीवा पुढो सत्ता,

श्रमञ्ज सञ्च परिएाएण ॥ ४॥

वणस्सई चित्तमत-मस्काया अणेग जीवा, पुढो सत्ता, श्रवत सह परिणएणं, तं जहा-श्रग्गवीया, मृलवीया,

पोरवीया, राधवीया, वीयरुहा समुश्चिमा, तण, ल

या ॥ वणस्सप्रकाश्या, स वीया, चित्तमंत मकाया,

अर्षेग जीवा, पुढो सत्ता, अनत्र सत्र परिषएण ॥५॥, से जे पुण इमे अर्षेगे, वहवे तसा पाणा ॥ तंजहा-

स ज वुष दम अवन, पर्व तता नावा । तावत द्धंक्या, पोयया, जराज्या, रसया, संसेक्मा समुछि मा, चित्रया, जववाक्या, जेसिं केसिं च पाणाणं, स्र जिक्कंत, पिक्कंत, संकुचियं, पसारियं, रुयं, ज्ञत, त

स्सियं, पक्षाइयं, आगाई गई, विनाया, जे य कीम प यंगा जा य कुंथुं पिप्पीक्षिया, सबे वेइदिया, सबे तेई दिया, सबे चर्डारॅटिया, सबे पचिदिया, सुबे तिरिक्

ाद्या, सब चर्जाराच्या, सब पाचाद्या, सब तिरस्क कोििंग्या, सबे नेरहया, सबे मणुया, सबे देवा, सबे पाणा परमाइम्मिया॥ एसो खबु उद्घो जीवनिकार्ड,

पाणा परमाद्दानमया ॥ प्ला खब्बु वटा जावानका तस्सकार्व ति पबुचई ॥६॥

इचेसिं ठएइं जीवनिकायाण, नेव सयं दंर्म समार नेजा, नेवऽत्रेहि दर्म समारंजावेजा, दर्म समारंजते ऽवि खन्ने न समणुजाणेजा, जावज्जीवाए, तिविद् तिविद्देण, मणेणं, वायाए, काएण, न करेमि, न कार

वेमि, करंतंऽपि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स जते, पिनकमामि, निंदामि गरिहामि, ब्रप्लाणं वोतिरामि॥ पढमे जंते मह्वए, पाणाञ्चायानं वेरमणं, सर्वं जं

पढमे जेते मह्बए, पाषाइवायार्च वेरमणं, सर्व जं ते पाषाइवार्य पचस्कामि से सुहुमं .वा, वापरं वा, (६) तृटक अध्ययनो,

तं जहा-पुढविकाइया १, आखकाइया १, ते ठकाइया १, वांचकाइया ४, वणस्तइकाइया ५, तस्तकाइया ६॥ पुढवि चिक्तमत-मरकाया, अषोग जीवा, पुढो सत्ता, अमझ सञ्च परिवाय्वा ॥ १॥ आखिचतंत-मरकाया, अषोग जीवा पुढो सत्ता, अमञ्च तञ्च परिवाय्वा ॥ १॥

सु पत्रत्ता, सेयं में श्रहिक्किंग श्रद्ययाण धम्म पत्रति ।श इमा खबु सा ठक्कीविषया नामऽपयण, समरोणं जगवया महावीरेण, कासवेणं पवेह्या, सु श्रद्काया, सु पत्रत्ता, सेयं मे श्रहिक्किंगं श्रवयणं धम्म पत्रति॥

तेज चित्तमत-मस्काया, अर्थेग जीवा, पुढो सत्ता अञ्जञ सत्र परिषपण ॥ ३ ॥ बाज चित्तमत-मस्काया, अर्थेग जीवा पुढो सत्ता,

वाज चित्तमत-मस्काया, अलेग जीवा पुढो सत्ता, अनव सम्परिणएण ॥ ४॥

वणस्सई चित्तमत-मस्काया खणेग जीवा, पुढो सत्ता, खन्न सह परिणएणं, तं जहा—खग्गवीया, मूलवीया, प्रोरवीया, राधनीया, बीयहहा समुहिमा, तण, स

प्रोरवीया, राघनीया, बीयरुहा समुश्चिमा, तए, ख या ॥ वणस्सङ्काङ्या, स बीया, विसमंत मरकाया,

दश्वेका सिकतुं चोशुं अध्ययन-श्रुणेग जीवा, पुढो सत्ता, श्रनत्त सत्त परिणएएं।।।।।।

से जे पुण इसे अणेगे, बहवे तसा पाणा ॥ तंजहा-श्रंक्या, पोयया, जराज्या, रसया, संसेइमा समुचि मा, इम्रिया, उबबाइया, जेसिं केसिं च पाणाणं, अ

निकंत, पिकंत, संकुचियं, पसारियं, रुयं, न्नतं, त स्सियं, प्रसाइयं, आगाई गइ, विनाया, जे य कीम प यंगा जा य कुंयुं पिष्पी खिया, सबे वेश हिया, सबे तेई दिया, सबे चर्डारे दिया, सबे पंचिंदिया, सबे तिरिक जोशिया, सबे नेरझ्या, सबे मणुया, सबे देवा, सबे

पाणा परमाहिमया ॥ एलो खद्ध वही जीवनिकार्य, तस्सकार्र चि पत्रचई ॥ ६॥ इंद्रेसि ठएहं जीवनिकायाणं, नेव सय दंदं समार नेजा, नेवऽत्रेहि दंनं समारनावेजा, दर्न समारंजते

ऽवि श्रन्ने न समणुजारोज्जा, जावज्जीवाए, तिविहं तिविद्देण, मणेण, वायाए, काएण, न करेमि, न कार वेमि, करंतंऽपि श्रन्नं न समणुजाणामि, तस्त जते, पिकसामि, निंदामि गरिहामि, श्रप्याणं वोलिरामि॥ पढमे चंते महत्वप्, पाणाङ्यायार्ख वेरमणं, सब मं

ते.पाणाइवायं पंचरकामि से सुहुमं वा, वापरं वा,

तृहक अध्ययनी (v) तस्सं वा, थावरं वा, नेवं सय, पाणे छाइवाएङा(, ने वडनेहिं, पाणे श्रह्वायावेजा, पाणे श्रह्वायंतेऽवि

हेणं, मखेणं, नायाप, काएणं, न करेमि न कारवेमि, करतंऽिप छात्रं न समणुजाणामि, तस्स जंते, पिन कमामि, निंदामि, गरिहामि अप्पाण बोसिरामि॥

अन्ने न समुजाणेह्ना, जावङ्गीवाए, तिविह तिवि

पढमे जते महबए, उविठिर्जमि, सवाज्ञेपाणाद्वायाज वेरमणं ॥ १ ॥

अहावरे जुचे जंते महबए, मुसावाया वेरमणं, स वं नंते मुसावाय पचकािम । से कोहा वा, लोहा वा,

प्रया वा, हासा वा, नेव सय मुसं वाएड्या, नेवऽन्नेहिं मुसं वायावेजा,मुस वायतेऽवि अन्ने न समणुजायेजा जावजीवाए, तिविहं तिविहेणं, मणेण, वायाए, का एणं, न करेमि, न कारवेमि, करंतंऽपि श्रव न समणु जाणामि, तस्स इति, पनिक्रमामि,निंदामि, गरिहामि, अप्पाण वोतिरामि ॥ असे चंते महबए, उवितरिम, सदार्च मुसावायाचं वेरमणं ॥२॥

अहावरे तचे जते महबए, अदिवादाणार्च जंते श्रदिबादाणं पचस्कामि से, गामे वा दश्वेकासिकनु चोथुं अध्ययन (ए) वा, रहे 'वा, अर्ष' वा, वर्डु वा, अर्षु वा, यूर्ष वा चित्तमंतं वा, अचित्तमंतं वा, नेव सर्य आदसं गिएहें ज्ञा, नेवक्रीहें अदिशं गिएहावेजा, अदिशं गिएहेंतेऽवि

करंतंऽिप अन्न न समणुजाणािम, तस्स जंते पिकक मामि, निंदािम, गरिदािम, अप्पाणं वोसिरािम तचे जंते महब्द, जविष्ठिम, सबार्ज अदिन्नादाणार्ज

श्चन्ने न समणुजाणेज्ञा, जावज्ञीवाए, तिविहं तिवि हेणुं मणेणुं, वायाए, काएण, न करेमि; न कारवेमि,

वेरमण ॥ ३ ॥ श्रहावरे चन्नने जते महबए, मेहुणान वेरमणं; सबं जंते मेहल पश्चकामि. से दिवं वा. माणस्तं वाः

सबं जंते मेहुण पश्चकामि, से दिवं वा, माणुस्तं वा; तिरिक्तजोिषयं वा, नेव सय मेहुणंसेवेजा, नेवऽने हि मेहुणं सेवावेजा, मेहुणं सेवंतऽवि स्त्रवे न समणु जायेज्जा, जावज्जीवाए, तिविहं तिविहेणं, मणेणं, वा

याए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि करतऽपि छात्रं न समणुजाणामि, तस्स जंते, पिकक्कमामि, निंदामि, गरिदामि, अप्पाण वोसिरामि॥ चउठे जंते महबए, उपितनिमि, सबार्ख मेहणार्ज वेरमणं॥ ॥॥

जविज्ञिमि, सबाजे मेहुणाजे वेरमणं ॥ ४ ॥ अहावरे पंचमे जेते महबप, परिग्गहाजे वेरमणं;

तृहक श्रध्ययनो (50)

सबं जते परिग्गह पचकािम, से खप्पं वा, बहुं वा, छाणुं वा, श्रुख वा, चित्तमत वा, श्राचित्तमंतं वा; नेव सय परिगाई परिगिएहेजा नेवडबेहि परिगाह परि गिएहावेज्ञा. परिग्गह परिगिएहतेऽवि श्रन्ने न सम्पूष

जापेजा. जावक्कीवाए. तिविहं तिविहेणं. मपोपं वायाप, काएण, न करेमि, न कारवेमि, करंतऽपि अश न समणुजाणामि, तस्स जते, पिकक्रमामि, निंदामि गरिहामि श्रप्पाणं वोसिरामि ॥ पंचमे जंते महबयः

छवडिजेमि, सवाजं परिग्गहानं वेरमण॥ ५॥ श्रहावरे ठठे जते वद, राईजोयणार्च वेरमणं, सव

र्जते राईनोयण पद्यकामि, से असण वा, पाणं वा, खाइमं वा, साइम वा, नेन सयं राई जुजेजा, नेवड्से हिं राई छुजावेला, राई जुंनतेऽवि खन्ने न समणुजाणे

ज्जा, जावज्जीवाप, तिविहं तिविहेण, मणेणं वायाए, काएण, न करेमि, न कारवेमि, करतऽपि श्रव न स मणुजाणामि, तस्स नते, पिकक्मामि, निंदामि, ग

िर्चिमि, सबार्च राईनोयणार्च वेरमणं ॥ ६॥

रिहामि, खप्पाण बोसिरामि ॥ ठहे जते वए, जब इचेइयाइ पंच महबाइ! राईजोयण वेरमण ठ

दश्वेकाखिकनुं चोधुं अध्ययन (११) गहं, अन हियग्याण, जनसपिक्तताणं विहरामि ॥ से जिरकू वा, जिरकूषी वा, संजय; विरय, पनिहय पद्मकाय पावकम्मे, दिया वाः राजे वाः एगर्ज वा. प रिसागर्छ वा, सुत्ते, वा, जागरमाखे वा, से पुढावे वा, न्नित्तिं वाः सिखं वाः खेद्ध वा. ससररकं वा काय, स सररक वा वज्रं इज्जेण वा, पाएण वा, कठेण वा, कि **लिंचेण वा. श्रं**युलियाए वा. सिलागाए वाः सिलाग रहेण वाः नाबिरेजाः, न विविरेजाः, न घरेजाः न निदेक्ताः श्रन्नं नासिहावेक्ताः न विसिहावेक्ताः न घष्टावेड्माः न निदावेड्माः स्थन ब्रासिहतं वाः विक्षि हंत वा, घटंतं वा: जिदत वा,न समग्रजाणेड्या, जाव क्तीवाए, तिविहं तिविहेणं; मणेण, वायापः काएणः न करोमि; न कारवेमि: करतऽपि श्रत्नं न समणुजा णामिः तस्स जंते, पश्चिमामिः निदामि, गरिहासिः

श्रप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ से जिस्क् वा, जिस्कूणी वा, सजय, विरय, पिन्ह्य पद्यस्काय पावकम्मे, दिया वा, राज वा, पगर्ज वा, प रिसागर्ज वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से जदगं वा, जुसं वा, हिमं वा, महिय वा, करग वा, हरतणुगं वा, सुद्धो (११) तृटक श्रध्ययनोः

दगं वा, जदन्रह्मं वा कायं, नदन्रह्मं वा वन्नं, ससिष्टिं या कायं, ससिष्टिं वा वन्नं, नामुसेज्ञा, न सफुतेज्ञां, नाविसेज्ञा, न पवीलेज्ञा, न अस्कोमेज्ञा, न परकोमें, ज्ञा, न आयावेज्ञा, न पयावेज्ञा, अन्न नामुसावेज्ञा, न संफुतावेज्ञा, न आवीलावेज्ञा, न पवीलावेज्ञा, न अस्कोमावेज्ञा, न परकोमावेज्ञा, न आयावेज्ञा, न प यावेज्ञा, अन्न आमुसंत वा, संफुतंतं वा, आयावेज्ञा, न प यावेज्ञा, अन्न आमुसंत वा, संफुतंतं वा, आयावं ता, पवीलतं वा, अस्कोमंतं वा, परकोमंतं वा, आयावं तं वा, पयावतं वा, न समणुजाणेज्ञा, जावज्ञोवाए, तिविद्दं तिविद्देण, मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमिंग् न कारवेमि, करतंऽपि अन्न न समणुजाणामि, तस्स

सिरामि ॥ १ ॥
से निष्यु वा, निष्युणी वा, सजय, विरय, पिड्य प्रवासाय पावकमी, दिया वा, राजं वा एगर्जं वा, पिर सामजे वा, सुचे वा, जागरमाणो वा, से श्रमणि वा, इगार्खं वा, सुन्तुरं वा, श्रीच वा, जाबं वा, श्रह्मायं वा, सुन्तुरं वा, श्रीच वा, जाबं वा, श्रह्मायं वा, सुन्तुरं वा, श्रह्मायं वा, वाहं वा, श्रह्मायं वा, सुन्तुरं वा, श्रह्मायं वा, वाहं वा, श्रह्मायं वा, सुन्तुरं वा, श्रह्मायं वा, वाहं वा, सुन्तुरं वा, वाहं वा, वा

सिंदेजा, न बजाबेजाः पजाबेज्जाः न निवावेज्जाः,

प्रते, पनिक्रमामि, निदामि, गरिहामि, खप्पाणं वो

दश्वेकाश्विकनुं चोधुं अध्ययनः धन्नं न उज्जावेजा, न घटावेजा, न शिंदावेजा, न **इज्ञासावेजा, न पज्ञासावेजा, न निवाबावेजा,** श्रनं उन्नंतं वा, घटंतं वा, जिंदंतं वा, उन्नाखंतं वा, पज्ञाखंत वा, निदावतं वा, न समणुजारोज्ञा, जा वज्ञीवाप्, तिविहं तिविहेणं, मणेणं, वायाप्, काप्णं. न करेमि, न कारवेमि, करंतंऽपि श्रन्न न समग्रजा णामि, तस्त जते, पिकक्षमामि, निदामि, गरिष्टामि, ष्ठप्पाणं वोतिरामि॥३॥ से जिख्लू वा, जिख्लूणी वा, सजय, विरय, पिन हय पद्यकाय पावकम्मे, दिया वा, रार्ख वा, एगर्ड वा, परिसागर्र वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से सि एण वा, विहू एण वा, ताखियटेण वा, पत्तेण वा, पत्त

प्ण वा, विहू प्ण वा, तालियटेण वा, पत्तेण वा, पत्त भंगेण वा, साहाए वा, ताहाजमेण वा, पिहू प्ण वा, पिहू ण हुनेण वा, चेलेण वा, चेल कनेण वा, हुनेण वा, मुहेण वा, अप्पणो वा कार्य, वाहिर वा वि पुग्ग लं, न फुमेज़ा, न वीप्जा, अनं न फुमावेजा, न वीयावेज्जा, अनं फुमंतं वा, वीयत वा न समणुजा पेज्जा, जावज्जीवाए, तिविह् तिविहेणंमणेणं, वायाप, काएणं, न करेमि, न कारवेमि, करंतंऽपि अनं न

(१४) वृटक अध्ययनो 🐬 समणुजाणामिः तस्स जते पिकक्षमामि निंदामिः गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥ ४ ॥ से जिल्लू वा, जिर्लूणी वा, सजय, विरय, पॅनि ह्य पद्मकाय पावकम्मे, दिया वा, रार्च वा, एगर्च वा,

परिसागर्र वा, सुते वा, जागरमाणे वा, से वीएसु वा बीय पइडेसु वा, रूढेसु वा, रूढ पइडेसु वा, जायसुं वा, जाय पश्हेसु वा, इरिएसु वा, इरिय पश्हेसु वा,

विक्रेस वा, विव पश्हेस वा, सचित्तेस वा सचित्त कोल पिकनिसीएस वा गहिउजा, न चिंहरेजा, न नि सीएउजा, न तुयहेउजा, श्रन्नं न महावेउजा, न चिहावे ज्जा. न निसीयावेज्जा,न तुयहावेज्जा,श्रव गद्यतं वा ।चन्नतं वा, निसायत वा, तुयहत वा, न समणुजाणे

डजा, जावडजीवाप्, तिविह् तिविहेखं, मणेला, वाया ए काएएं, न करेमि, न कारवेमि करतारि आर्म न

सम्माजाणामि तस्स जते, पिक्समामिः निंदामि, गरिहामि, श्रप्पाणं, वोसिरासि ॥ ॥ से जिल्लू वा, जिरलूणी वा, सजय, विरय, पिन हय पचरकाय पावकम्मे, दिया वा, रार्च वा, एगर्ज

वा, परिसागर्र वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से कीम

दशवैकालिकनुं चोधुं छ। ययन (१५)

वा, प्यंगं वा, कुथुं वा, पिष्पि बियं वा, इम्रेंसि वा, पायिस वा, वाहुिस वा, छम्नेंसि वा, छद्रंसि वा, सी संसि वा, व्रज्ञंसि वा, पिन्गहंसि वा, क्वलसि वा,

पायपुत्रणंति वा, रयहरणंति वा, गोव्रगंति वा, उ कुगति वा, दंभगंति वा, पीढगांति वा, फलगंति वा, सेज्जगंति वा, संयारगंति वा, कलयरंति वा, तहप्त गारे जवगरण जायति, तर्च संजयामेव, पभिलेहिय पिनेलेहिय, पमज्जिय पमज्जिय, पगंत-मवणेज्जा नोणं संघाय-मावज्जेज्जा ॥ ६॥

(अनुषुग्रनम्) ष्यज्ञयं चरमाषो य, पाण ज्याइ हिसई ॥ वंभई पावय कम्मं, तं से होइ करुय फर्नं ॥ ९ ॥

श्रज्यं चिन्नमाणो य, पाण जूयाई हिसई ॥ वंधई पावयं कम्मं, तं से होइ कमुय फलं ॥ २ ॥ श्रज्यं सयमाणो य, पाण ज्याइ हिसई ॥ वंधई पावयं कम्मं, तं से होइ कमुय हिसई ॥

वधर पावय कम्म, त स हार ककुय ।हसर ॥ श्रज्ञय स्यमाणो य, पाण ज्याई फुलं ॥ ३ ॥ वधर्र पावय कम्म, तं से होर ककुय फलं ॥ ४ ॥ श्रज्यं ज्ञजमाणो य, पाण ज्यारं हिसर्र ॥ (१६) छूटक अध्ययनो

बैधई पावय कम्मं, तं से होइ करुयं फर्स ॥ ५ ॥ श्रजयं जासमाशो य, पाण जुयाई हिंसई ॥ बैभई पावयं करमें। ते से होई कठ्यं फर्स ॥ ६ ॥ कहं चेर कहं चिक्ते कह-मासे कहं सए॥ कहं प्रजंतो जासंतो पावकम्म न वधई ॥ ७ ॥ जयं चरे जयं चिहेः जय-मासे जयं सए॥ जयं चंजेतो जासतोः पावकम्म न बंधई ॥ 🗗 ॥ सब ज्यडप्पज्यस्तः सम्म ज्याई पातर्ने ॥ पिहियोसवस्से दतस्स, पावकेम्भं न बंधई ॥ ए ॥ पढमें नाएं तर्र दया, एव चिन्नइ सब सजए ॥ श्रद्भाणी किं काड़ी, किं वा नाहीय सेय पावगा। १०॥ सोधा जाणइ कल्लाणं, सोचा जाणइ पावगं ॥ छनपंपि जाणह सोचां, जं सेयं त समायरे ॥११॥ जो जीवेवि न याणाई, श्रजीवेवि न याण्डी॥ जीवाजीवे श्रयाणंतोः कहं सा नाही य संजमा। १२॥ जो जीवेबि वियाणाई, अजीवेबि वियाणई ॥ जीवाजीवे वियाणंती, सो ह नाही य सजमं॥ १३॥ जया जीव -मजीवे या दोवि एए वियाणई ॥ गई बहु बहुं, सब जीवाण जाण्ई ॥ १४॥

जया गई बहुविहं, सब जीवाण जाण्हे ॥ तया पन्ने च पावं च, वंध मोरकं च जाणई ॥१५॥ जया पुत्रं च पावं च, वंध मोरकं च जाणई॥ तया निविंदए जीए, जे दिवे जे य माणुसे ॥ १६॥ जया निविद्य जोए, जे दिवे जे य माणुसे ॥ तया चयइ संजोगं, सम्रितरं च वाहिरं ॥ १९ ॥ जया चयइ संजोगं, संधितर च वाहिरं॥ तया मुंने जनिनाणं, पद्यइए अणगारिय ॥ १८ ॥ जया मुंने जविताण, पवृत्र श्राणमारियं ॥ तया संवर-मुक्कि, धम्मं फासे व्यक्तरं ॥ १ए ॥ जया संवरं-मुक्करं, बन्म फासे श्रापुत्तरं॥ तया धुणई कम्म रय, अबोहि कख़स कहं ॥१०॥ जया धुणई कम्म रय, अवोहि कल्लसं कर्म॥ तया सबसग नाण, दंसणं चानिगचई ॥ ११ ॥ जया सबनमं नाणं, दंसएं चानिमंजर्दे । तया खोग-मलोगं च, जिलो जालइन्केनली ॥११॥

जया स्रोग-मस्रोगं च. जिस्रो जास्रठ केवसीता तया जोगे निरुजित्ता, सेबेसिं पिनवजाई ॥ १३ ॥ जया जोगे निहंजिना, सेखोसे पश्चिक्ताई ॥

(₹G) तृटक श्रध्ययनो, तया कम्मं खवित्ताणं, सिर्कि गड़इ नीरर्ज ॥ १४ ॥ जया कम्मं खविताएं, सिद्धिं गड्ड नीरर्ड॥ तया खोग मञ्चयञ्चा, सिद्धो हवइ सासर्ज ॥ १५ ॥

(आर्थागीतेतरचम्)

शुहसायगस्स समणस्त्र,सायाज्ञ्वगस्स निगामसा**ः**स्स

उद्ये खणा पहे।यस्त, जुल्लहा सुगइ तारिलग्गस्त ॥१६॥

त्रवो ग्रुपाप्यहाण्यस्त, ठउज्जमङ खति सजमश्यरत्र॥

परीसहे जिएं तस्स,सुञ्जहा सुगइ तारिसग्गस्स ॥१९॥

पन्नति ते पयाया,

खिप्पं गर्छति समर नवणाइ॥

जेसि पियो तही स-

जमो य खंती य दंजचेरं च ॥ २०॥

(अनेब्रेड १५)

इक्षेय ठङ्कीवणिय, सम्महिष्ठि सया जए॥ इब्रहं बनित सामन्न, कम्मुणा न विराहिजासि चि

बेमि ॥ घए ॥

॥ इति ठर्जीवणिया नाम चठठ ब्रद्ययणं सम्मत्त ॥

चचराध्ययननुं पहेलुं अध्ययन ः(१५)

ष्णय श्री उत्तराध्ययन सूत्रनुं पहेलुं, वीनुं, त्रीनुं छने चोयुं छध्ययन प्रारंनः

(अनुपृत्वृत्तम्) संजोगा विष्य सकस्स, ऋणगारस्त जिस्कृषो ॥ विण्यं पांच करिस्सामि, आणुपुर्वि सुरोह मे ॥ १ ॥ श्राणा निद्देस करे, गुरूल-मुख्वाय कारए ॥ इंगियागार संपन्ने, से विणीएनि बुचई ॥ १ ॥ श्राणा ऽनिद्देस करे. ग्ररूश-मणुववाय कारए ॥ पिनणीए असंबुद्धे, अविषोपत्ति बुचई ॥ ३ ॥ जहा सुषी पूड् कन्नी, निकक्तिकार सबसी॥ पर्व इस्सील पिकणीए, मुहरी निकसिजाइ ॥ ४ ॥ क्षा कंनगं चइताएं, विद्वं जंजह सूयरे ॥ प्यं सीलं चइताणं, इस्सीख रमई मिया। पा सुणिया न्नावं साणस्स, सूयरस्स नरस्स य ॥ विराप रुविद्ध अप्यार्ण, इन्नंतो हिय-मप्पणो ॥६॥ त्तम्हा विषय-मेसिङ्जा, सीखं पमिखनेङ्जर्छ ॥ बुद्धपुत्त नियागठी, न निकसिद्धाइ कन्द्रई ॥ ७ ॥ निस्तते सिया मुद्दी, बुद्धाणं अतिए सया ॥ श्रव जुनाणि सिकेझा, निरठाणि व वजाए ॥।।।। **अ**णुसासिर्छ न कुप्पेद्धा, खंति सेवेज परिए ॥ खुड़ोहिं सह संतर्गि, हासं की मं च वज्ञय ॥ ए॥ माय चंदािखयं कासी, वहुयं मा य श्राखवे ॥ कालेण य श्रहिजिता, तर्र काइज एकर्र ॥ १० ॥ आहरा चंनालिय कहु, न निन्हें वेज क्याइवि॥ कर्म किनि चासिजा, अकम नो किनिस य ॥११॥ मा गिलयस्तेव कसं, वयण मिन्ने पुणी पुणी ॥

कसंव द्रु - भाइन्ने, पावग परिवज्ञए ॥ १२ ॥ (काव्यम्)

> अणासना युसनया क्रसीटाा, मिलंपि चक पकरेति सीसा ॥ चित्ताणुष्या लहु दक्तोववेत्रा, पसायए ते हु इरासयपि ॥ १३ ॥

(अनुष्ट्रवृत्तम्)

ना पुढ़ी वागरे किंचि, पुढ़ी वा नाखियं वए ॥ कोह श्रसचं कुवेजा, घारेजा पिय-मिपयं ॥१४॥ अपा चेव दमेयबो, अपा हु खहु हुदमी ॥

श्रपा दतो सुद्दी होइ, श्रस्सि लोए परत य ॥१५॥ वरं मे छाप्पा दतो, संजमेण तवेण य ॥

(88) जत्तराध्ययननं पहेलं अध्ययन माहं परेहिं दन्मंतो, वंधणेहिं वहेहि य ારદ્વા पित्रणीयं च बुद्धाणं, वाया श्रञ्जव कम्मुणा ॥ यावी वा जइ वा रहस्से, नेव कुद्धा क्याइवि ॥१९॥ न परकर्र न पुरत, नेव किञ्चाण पिष्ठर्छ॥ न जुंजे करणा करू, सवणे नो पिनस्प्रणे lisoit नेव पब्हि छियं कुद्धा, पस्कर्षिम च संजए॥ पाप पसारिए वावि, न विष्ठे ग्रहणंतिष ાકહા श्रायरिपाई वाहित्रो, तुसिणी न कयाइवि॥ पसायपेहि नियागनी, नवचिन्ने गुरुं सया HOSH श्राखवंते खवते वा, न निसिक्त क्याइवि ॥ चञ्जूण आसण धीरो, जर्ज जुत्त पनिस्सरो 112211 श्रासणगर्छ न प्रमेजा, नेव सेजागर्छ क्याइवि ॥ थागम्मकरूर्व सतो, प्रहेका पजलीवमो 112211 एवं विषय जनस्त, सुत्तं श्रष्ठ स तञ्जनयं ॥ पुष्ठमाणस्स सीसस्स, वागरेङ्ग जहा सुयं 115311 मुसं परिहरे जिल्लू, न य ओहारिणि वए ॥ जासा दोसं परिहरे, माय च वजाए सया ॥२४॥ न खबेड़ा पुट्टो सावजं, न निरुट्ट न मन्सयं॥ अप्पण्ठा परठा वा, उज्ञयस्ततरेण वा 🚈 🖘 शाश्या।

| (থথ) : | वृटक श्रध्ययनो | |
|--------------------|-----------------------|---------|
| समरेस खगारेस. | सधीसु य महापहे । | 1 |
| एगो एगिबिए र्सा | के, नेव चिक्ठे न सब | वे ॥१६॥ |
| | ति, सीष्ण फरसेण | |
| ममखानोचि पेहा | ए, पयुज्ञचं पिनस्सुणे | विद्या |
| अणुसासण-मोवा | य, डक्करस्त य चीय | र्ण॥ |
| हियं तं सन्नई पन्न | ो, वेसं होइ असाहुए | म ॥ह्या |
| | बुद्धा, फरसपि अणुस | |
| | ा, खति सोहिकरं पय | |
| | ता, खणुचे खरुए थि | |
| | ई, निसीएजऽप्कुक्कुए | |
| कालेण निकमे | नेखवू, काखेण य परि | नेकसे ॥ |
| | ता, काले काल समा | |
| | en Grand South | |

परिवामियं न । चन्ना, । तर्खू दत्तस्य पाडरूवेण एसित्ता, मिय कार्लेण ज्ञरूद ॥३८॥

माददुर-मणासत्रे, नत्रेसि चरखु फासड ॥ धगो चिठेका जनठा, खधिचा त नइक्रमे 113311 नाइ उच्चेव नीए वा, नासब्रे नाइ दूरले ॥

फामुयं परकक थिकं, पिकगाहिका सजए แรยแ अप्पपाणपवीयमि, पिन्ननि संयुक्ते ॥

| उत्तराध्ययननुं पहे खुं अध्ययन- | (\$3) |
|--|--------|
| तमयं संजप् चुंजे, जयं श्रप्परिसानियं | ારૂપા |
| प्रकोति सुपकेति, सुज्ञित्र सुहके मके ॥ | 1 |
| सुनिहिए सुबहेति, सावजं वद्धाए सुणी | ારફા |
| रमए पित्र सासं, इयं न्नदंव वाह्य ॥ | , |
| षासं समइ सासंतो, गिंखयस्तंव वाहप | แรยแ |
| खुनुया मे चवेका मे, अकोसा य बहाय मे | n |
| कल्लाण्-मणुसासंतो, पावदि हिनि मन्नइ | ।।३७॥ |
| पुत्तो मे नाय नाइति, साहु कल्लाण मन्नई | li |
| पावदिडिठ श्रव्याणं, सासं दासत्ति मन्नई | ॥३ए॥ |
| कोवप आयरिय, अप्पाणं न कोवए ॥ | |
| बुद्धावघाइ न सिया, न सिया तोचगवेसए | llabil |
| श्रायरियं कुवियं नञ्जा, पत्तिएण पसायए॥ | |
| विद्यवेद्धा पंज विजनो, व्यक्त न पुणोचि | य ॥४१॥ |
| धम्मज्ञियं च ववहारं, वुद्धे हायरिय सवा | 11 |
| त–मायरंतो ववहारं, गरह नाजिगन्नई | 118511 |
| मणोग्यं वक्षगयं, जाणिजायरियस्तर ॥ | |
| तं परिगिच् वायाए, कम्मुणा जववायए | |
| वित्तो अचोइए निश्च, खिप्पं हवइ सुचोइ | ए ॥ |
| जहोवइहं सुक्यं, किञ्चाइ कुवइ सया 🥏 | 118811 |

| (११) ह्टक अध्ययनो | |
|--|------------------|
| समरेसु खगारेसु, सधीसु ख महापहे ॥ | ~ (|
| एगो एगिडिए सिंड, नेव चिंहे न संखवे | ાાશ્કૃષ |
| जं मे बुद्धाणुसासति, सीपण फरुसेण वा | 11 1 |
| ममलानोत्ति वेहाए, प्यूर्वचं परिस्सुले | 116311 |
| अणुसासण-मोवाय, जुक्रम्सस य चोय्णं | |
| हियं तं मन्नई पन्नो, वेसं होड् असाहुणो | ाहित्रा |
| हियं विगय ज्ञया बुद्धा, फरुसंपि अणुसासा | Ú II |
| वैस तं होइ मुढाण, खति सोहिकरं पुर्व | ાશિષ્ટા |
| आसणे व्वचिद्वेजा, अणुचे अकुए थिरे।। | |
| अप्पुष्ठाई, निरुष्ठ ई, निसीएजाऽ-कुक्कुष् | 11 <u>\$</u> 011 |
| कालेण निस्कर्ने जिल्ल्लू, कालेण य पिक्क | रे ॥ |
| झकार्वं च विविश्विता, कार्ले काल समायरे | 115211 |
| परिवामिए न चिटेला, जिरखू दत्तेसण चरे | 11 |
| पाडरुवेण एसिसा, मिय कालेखे अरक्षए | ાર્થા |
| नाःदूर-मणासन्ने, नन्नेसि चरख फासन ॥ | |
| एगो चिन्ने जनिता, खिषचा त नइक्से | ારફા |
| नाइ उद्येव नीए वा, नासन्ने नाइ दूरई ॥ | |
| फामुयं परकम थिम, पिमगाहिङ्का सजए | แสลแ |
| श्रप्पाणपवीयमि, पिन्नन्निम संवुद्धे ॥ | |
| • | |

जत्तराध्ययननुं पहेखुं श्रध्ययनः (१३) समयं संजप जुंजे, जयं खप्परिसारियं ારૂપા सुकरेचि सुपक्षेति, सुन्नित्र सहसे मसे ॥ सुनिहिए सुबहेनि, सावजं वद्धए मुणी ારફા रमए पंक्तिए सालं, ह्यं जहव बाहए।। षाखं समइ सासंतो, गवियस्तंव वाहए 118811 खुरुया से चवेका में, छाक्कोसा य बहाय से ॥ कल्लाण्∸मणुसासतो, पावदिकिति मन्न ॥३७॥ प्रतों में जाय नाइति, साहु कल्लाण मनई ॥ पावदिडिंज खप्पाण, सासं दासचि मञ्जर्ड ાારણા कोवए आयरिय, अप्पाणं न कोवए॥ बुद्धीवघाइ न सिया, न सिया तोत्तगवेसए llaBill व्यायरियं कुवियं नचा, पत्तिएण पसायए॥ विद्यवेद्धा पंज लिलमो, वएका न पुणाति य แชงแ धम्मिक्चयं च ववहारं, वुद्धे हायरियं सपा ॥ त-मायरंतो ववहारं, गरहं नाजिगहर्ड ાઇપ્રા मणोगयं वक्रगयं, जाणित्तायरियस्सन ॥ तं परिगिद्य वायाए, कम्मुषा जववायए वित्तो अचोइए निचं, खिप्पं इवइ सुचोइए॥ जहोवइह सुक्यं, किञ्चाई कुबइ सया

(१४) क्रुटक अध्ययनो ।

नचा नमइ मेहावी, सोए किती.से जायए ॥ हवइ किञ्चाण सर्वा, जूयावां जगई जहा ॥४॥। पुज्जा जस्स पसीयतो, सञ्जुद्धा पुत्रसंथुया ॥

118411

पसना साजइस्सति, विद्यसं अठियं सुयं (कान्ययः)

स पुजसबे सुविषािय ससए, मणोस्ट चिठ्ड कम्मसपया ॥

तवो सामायारि समाहि सबुमे, महज्जुई पचवयार पाखिया ॥४९॥ सदेव गंधह मणुस्स प्रहप्,

चइतु देहं मलपंक पुत्रय ॥ सिद्धे वा हवई सासप देवेवा,

अप्परम् महिद्विप त्ति वेमि ॥४०॥ ॥ इति विषयनामं पढमद्ययण् सन्मत्तं ॥

सुय में आठसं तेर्ण जगवया एव मास्काप, इह् खद्ध वावीसं परीसहा समग्रेण जगवया महावीर्य जारानेर्ण क्षेत्रण ने जिसस स्टेस्ट करा

कासवेषं पवेष्ट्या, जे जिरुख् सोखा नद्या जिद्या व्य जिज्ज्य जिस्कायरियाष परिवयतो पुठो नोहिर्वनिका,

उत्तराध्ययननं बीजं अध्ययनः क्यरे खुद्ध ते बावीसं परीसहा समखेखं जगवया म

हाबीरेण कासवेणं पवेज्या % जे जिल्खू सोचा नचा जिद्या श्रजिजूय जिस्कायरियाए परिवर्यतो पुर्हो नो विहंनिजा, इमे खलु ते बाबीलं परीसहा समधेषं' जगवया महावीरेण कासवेशं पवेदया, जे जिल्ला सो

चा नचा जिद्या श्रानिज्य जिस्कायरियाए परिवर्षेती पुष्ठा नो विहंनिज्ञा ॥ तंत्रहा--दिगिंठा परीलडे १, पिवासा परीसहे २, सीय परी

सहे ३, उसिए परीसहे ४, दंसमसग परीसहे ५, अबे ख परीसहे ६, अग्इ परीसहे ७, इडी परीसहे ७, च रिया परीसहे ए, निसीहिया परीसहे १०, सिज्जा

परीसहे ११, ब्रक्कोस परीसहे १२, वह परीसहे १३, जायणा परीसहे १४, अखोज परीसहे १५, रोग परीसहे १६, तणकास परीसहे १७, जल्ल परीसहे रठ, सकार पुरकार परीसहे रए, पन्ना परीसहे २०,

अन्नाण परीसहे ११, दसण परीसहे ११ ॥ परीसहाण पविज्ञत्ती, कासंत्रेणं पवेड्या ॥ विगिंठा परिगए देहे, तबस्ती जिरुख यामवं ।

तृटक अध्ययनोः (१६) न विंदे न विदावए, न पए न पयावए " 11211 कालीपवग सकासे, किसे धमणि संतर ॥ मायने असवा पावस्स, अदीव मधा सो चरे ngn तर्र प्रहो विवासाय, खगरो बला सजए ॥ सीजंदग त सेवेजा, वियमस्सेसणं चरे n u n वित्रावाएस पंथेस, श्रांखरे सुविवासिए ॥ परिसुक्त मुहादीण, तं तितिक्ले परीलई 11 4 11 चरंतं विरवं सुई सीयं फुसइ एगया ॥ नाइवेलं मुणी गहे, सोबाणं जिणसासणं 11 & 11 न में निवारण छाछि, ठवित्ताण न विज्ञए ॥ छारंत छाग्मि सेवामि इ.इ. जिल्लुन चिंतए ॥ ॥ ॥ इसिए परियावेणं, परिदाहेण तिज्ञिए॥ विंसु वा परियावेण, साय नो परिदेवए 11 0 11

जन्हाहि तनो मेहाबी, सीयाण नोवि पछए ॥ गायं नो परिसिचिज्जा, न विषज्ञा य श्रप्पयं ॥ ए ॥

प्रहो य दंस मसप्रहि, समरेव महामुखी ॥ नागो संगामसीसे वा, सुरो खनिहणे परं 1) go 11 न संतसे न वारिजा, मर्णेप न पर्रसए ॥

जवेहे न हणे पाणे, जुंजुंते मंस सोलियं 11 33 1

उत्तराध्ययननुं चीजु श्रध्ययन (53) परिज़्न्नोई वहोईं, होलामित्ति अचेलए॥ **प्र**डुवा सचेखए होरूखं, इ इ ज़िरूख़ू न चितए॥१२॥ एगया अचेखए होइ, सचेखआवि एगया ॥ एयं धम्मं हिय नचा, नाणी नो परिदेवए ॥ १३ ॥ गामाणुगामं रोयंतं, ऋणुगारं ऋकिंचणं ॥ श्चरई ब्राणुपवेसे, तं तितिरुखे परीसहं ॥ १४ ॥ अरइं पिन्न किचा, विरए आयर व्लिए ॥ धम्मारामे निरारंजे, जवलंते मणी चरे ॥ १५॥ संगो एस मणुस्साणं, जाउ खोगिम इडिउ ॥ जस्स एया परिज्ञाया, सुक्कंत चरस सामत्रं ॥ १६ ॥ प्व-मादाय महावी, पंकजुयार्ख इस्थित ॥ नो ताहि विइन्नेजा, चरेजात गवेसए ॥ १९ ॥ एग एव चरे खाढे, छाजिजूय परीसहे ॥ गामे वा नगरे वावि, निगमे वा रायहाणिए ॥ १८ ॥ असमाणो चरे जिल्लु नेव कुद्धा परिगाइ॥ असंसत्तो गिइथ्योहि, छाणिकेन परिवर् ॥ १ए ॥ सुसाले सुन्नगारे वा, रुख्लमृखे च एगउ ॥ अकुक्कुर्छ निसीएङ्का, न य विचासए परं ॥ २०॥ तथ्य से अध्यमाणस्त, जनसम्गानिधारए 🕼

(१६) तृटक श्रध्ययनो " न विंदे न विदावए, न पए न पयावए 11 R II काखीपवर्ग सकासे, किसे धमणि संतए ॥ मायन्ने श्रसण पाणस्स, श्रदीण मण सो चरे ॥३॥ तम पुठो पिवासाय, ज्ञगबो बज्ज संजय ॥ सीडेदग त सेवेजा, वियमस्सेसणं चरे n e n वित्रावाएसु पंथेसु, खाउरे सुविवासिए ॥ परिसुक मुहादीणे, तं तितिरुखे परीसहं 11 4 11 चरंतं विरवे खुई सीय फुसइ एगया ॥ नाइवेलं मुणी गहे, सोचाण जिणसासणं 11 & 11 न में निवारणं श्राष्ट्र, उवित्ताण न विद्धाए ॥ खहं तु खरिंग सेवामि इ इ जिल्लुन चिंतए ॥॥ उसिएा परियावेशं, परिवाहेश तिज्ञिए ॥ धिसु वा परियावेण, साय नो परिदेवए जन्हाहि तनो मेहाबी, सीवाण नोवि पछए॥ गायं नो परिसिचिद्धा, न विष्जा य श्रप्ययं ॥ ए ॥ पुष्ठी य दंस मसप्रि, समरेव महामुखी ॥ नागो संगामसीसे वा, सुरो श्रानिहणे परं 11 80 11 न संतसे न वारिजा, मर्णेप न पर्वसए॥ जवेडे न हपे पाषे, जुंजुंत मंस सोशियं 11 55 11

उत्तराध्ययननुं बीजु अध्ययनः (88) परिज़न्नोई वहेर्हि, होखामित्ति श्रचेखए ॥ **अ**ड्वा सचेखप् होरूखं, इ इ जिल्लू न चितए॥१२॥ एगया श्रचेखए होइ, सचेख्यावि एगेया ॥ एय धनमं हियं नचा, नाणी नो परिदेवए ॥ १३ ॥ गामाणुगामं रोयंतं, अणुगारं अकिंचणं ॥ श्ररई ब्रणुपवेसे, तं तितिरुखे परीसहं ॥ १४ ॥ अरई पिठेल किन्ना, विरए आयरश्लिए ॥ धनमारामे निरारंजे, उपलंते मुणी चरे ॥ १५ ॥ संगो एस मणुस्ताणं, जाउ खोगमि इञ्जि ॥ जस्त एया परिक्राया, सुक्कंत चरत सामनं ॥ १६॥ एव~मादाय मेहावी, पकन्नयार्ख इस्थिनं ॥ नो ताहि विद्वनेज्ञा, चरेज्ञत गवेसए 11 23 11 एग एव चरे लाहे, अनिज्य परीसहे ॥ गामे वा नगरे वावि, निगमे वा रायहाणिए ॥ १८ ॥ श्रसमाणो चरे निरुख नेव कुद्धा परिगाइं॥ असंसत्तो निद्ध्येहिं, अणिकेन परिवर् ॥ १ए॥ सुसाले सुन्नगारे वा, रुख्समूखे च एगछ ॥ अकुक्कुर्छ निसीप्डा, न य विचासएँ पर ॥ २० ॥ तथ्य से श्रश्यमाणस्त, उवसम्गानिधारए ॥

(२८) वृटक अध्ययनोः' संकाजीर्ज न गरेजा, रुवित्ता खन्न-मासर्प ॥ २१ ॥ **उचावयाहिं सेक्जाहिं, तवस्ती** जिरख़ थामवं ॥ नाइवेखं विद्वनेद्धा, पावदिग्री विद्वन्नह 🔠 ॥ ११ ॥ प्रित्विकुवस्सयं सङ्क, कल्लाणं श्रमुव पात्रगं ॥ कि सेगराइ करिस्सइ, एवं तथ्य हियासए ॥ २३॥ श्रवकोसेज परो जिल्लु, न तोसि पविसजते ॥ सारिसो होइ बाखाण, तम्हा निरुख न सजखे॥१४॥ सोद्याणं फहला जासा, दारणा गामकंटगा ॥ त्रसिणीज जवेहिजा, न तार्ज मणसी करे ॥ १५॥ इंड न सजदे तिरुख़, नणंपि न पर्वसए।। तितिरखं परम नद्या, जिल्लू धम्म विचितए॥ १६॥ समण सजयं दंतं, इणिङ्जा कोइ कन्नई ॥

संबं से बाह्य होइ, निष्ठ किंचि श्रजाहर्य ॥ १० ॥ गोयरग्ग पविठस्त, पाणी नो सुप्पसारए ॥ सेर्घ अगार वासोत्ति, इह जिरुसू न चिंतए ॥ २७ ॥ परेसु घास मेसेजा, जोयणे परिनिष्ठिए ॥ सक्ते पिंमे श्रस्तके वा, नाणुतपेक्त पंतिए ॥ ३० ॥

निम्न जीवस्त नासोत्ति, एव पेहेला संजय ॥ १७ ॥ कुकरं खद्ध जो निचं, अणगारस्त जिल्लुणो ॥ उत्तराध्ययनुं वीजुं श्रध्ययनः (१७) श्रज्ञोवाइं न खप्तामि, श्रविखान्नो सुप सिया ॥ जो एवं पिन संचिख्ते, श्रक्षान्नो तं न तज्जए ॥ ३१ ॥

नचा उप्परंग द्वारक, वेषापाए छह हिए ॥ श्वदीणो यावए पन्नं, पुठो तक हियासए ॥ ३१ ॥ तिगिर्वं नाजिनंदेजा सचिस्केत गवेसए ॥

एयं खु तस्स सामन्नं, जं न कुद्धा न कारवे॥ ३३ ॥ श्रवेखगस्त छुट्स्स, संजयस्स तवस्सिणो ॥ तणेसु सुयमाणस्स, होजा गाय विराहणा ॥ ३४ ॥

, श्रायवस्स निवाएणं, श्रम्मा हवइ वेयणा ॥ एवं नद्या न सेवति, तंतुजं तण तिनया ॥ ३५ ॥ किस्रमाय मेहावी, पंकेण य रयेण वा ॥

किञ्जनगाय मेहावी, पंकेण य रयेण वा ॥ पिंसु वा परियावेण, सार्थ नो परिदेवष ॥ ३६ ॥ वैङ्ज निद्धारापेही, श्रारिय धम्म -मणुत्तरं ॥

जाव सरीर जेरुनि जब्ब काएण धारए ॥ ३७ ॥ श्रजिवायण मप्जुटाणं, सामी कुजा निमंतणं ॥ जे ताइ पिनसेवति, न ते सपेहए मुणी ॥ ब्रॅंड ॥ श्रणुक्कसाई श्रप्पिने, श्रजाएसी श्रबोद्धए ॥

ज ताइ पानसवात, न त सपह्य मुखा ॥ द्वित ॥ श्रणुकसाई श्राप्तिः श्रजाएसी श्रवोद्ध्य ॥ रसेसु नाणुगियेजा, नाणुतप्षेक्ष पत्नवं → ॥३७॥ सेनुषां मय पुर्व, कम्मा नाणुका (३०) तृटक अध्ययनो 🐣 जेणाऽहं नाजिजाणामि, पुठो केणञ् कन्हुई॥ ४०॥ श्रह पद्या ग्रङ्कांति, कम्मा उनायफखा कमा ॥ एव-सरतासि खप्पाणं, नचा कम्मविवागयं ॥ ४१ ॥ निरहगंमि विग्रं, मेहणार्च सुसबुको ॥ जो सरकं नाजिजाणामि, धम्मं कहजारा पावगं ॥४२॥ तवोवहः ग-मादाय, पिनमं पिनवज्ञत ॥ ६५पि विहरत में, ठउम न नियहर्र ॥ ४३॥ नि नृण परक्षोप, इही दानि तनस्सिणी ॥ ছাত্রনা वैचित्तिसिनिः इ इ जिल्लू न चिंतए ॥४४॥ श्चनु निया श्रीत नियाः श्रद्धवर्शि निवस्तई ॥ मुसते एव- माह्सु, इ इ जिल्लू न चितए ॥ ४५ ॥ ए ए परीसहा सक्षेत्र कासवेर्ण पवेद्या ॥ जे जिरकू न विस्त्रेजा, प्रष्ठो केणइ कन्हुइ सि वेमि।४६। चत्तारि परमंगाणः इल्लहाणीह जंतुणो ॥ माणुसनं सुई सद्धाः सजमंमि य वीरियं ॥ १ ॥ ससावत्राण संसारे, नाणा गोत्तासु जाइसु ॥ कम्मा नाणाविहा कडू, पुढो विस्संजया पया ॥ २ ॥ ८ नया देवलोपस्, नरएसुवि एगया ॥ एगया आसुरंकायं, अहाकम्मेहिं गडह 11 🗦 11

उत्तराध्ययननुं त्रीजुं अध्ययन. (38) एगया खितयो होइ, तर्ड चंमाख बोकसो ॥ तर्ज कीम पर्यगो या तर्ज कुंधुं पिपीलिया ॥ ध ॥ एव-माद्दव जोणीसु, पाणिणो कम्म किविसा ॥ न निविद्धांति संसारे, सब्देसुव खन्तिया ॥ ५॥ कम्मसंगेहिं संमूह, इत्किया वह वेयणा ॥ अमाणुसास जोषोस, विणिहम्मति पाणिणो ॥ ६॥ कम्मार्षे तु पहाणाप, अणुवी कयाइछ ॥ जीवा सेहि-मणुपत्ता, आययंति मणु ायं ॥ ७ ॥ माणुन्सं विग्गह लध्धं, सुई धम्मस्स छुटलहा ॥ जं सोचा पिनवज्ञंति, तव खंति-महिंसयं 11 5 11 आहञ्च सवर्षं खध्य, सद्धः परम जुब्खहा ॥ ॥७॥

सोह्य नेपालयं वायु, तार्क्ष परिज्ञस्तर्दर्भ ॥ ए॥
सोह्य नेपालयं मन्नं, वह्य परिज्ञस्तर्द्ध ॥ ए॥
सुदं व सच्छुं सक्तं च, वीरिय पुण छुस्त्रह्म ॥
सहवे रोपमाणादि, ने। यणं पिन्वज्ञाए ॥ १०॥
माणुसक्ति आयार्ज, जो धम्मं सोच सद्दे ॥
स्वस्ती वीरियं सच्छु, सबुके निच्छो रयं ॥ ११॥
सोही उच्जुन्यस्स, धम्मो सुक्तस्स चिन्ठई ॥
निवाण परमं जाइ, वय सिनेव पावए ॥ ११॥
विवाण परमं जाइ, वय सिनेव पावए ॥ ११॥

पाढवं सरीरं हिचा छहुं पक्षतह दिसं 🔑 ॥ १३॥ विसाससेहि सीसेहिं, जस्का छत्तर छत्तरा ॥ महासुक्काव दिप्पता, मझंता खपुणच्यं ॥ १४॥

खरिया देव कामाएं कामरून विग्रविषो ॥ चहुं करेपसु चिठंति पुदा वास सया यहू ॥ १५ ॥ सञ्च विद्या जहा ग्राएं जस्का खानस्कर चुवा ॥

तष्ठ विद्या जहां वार्ष जस्ता खावस्तर चुवा ॥ व्यक्ति माणुस जोर्षिः से दसगेऽनिजयङ् ॥ १६ ॥ कर्न वद्य विद्या च प्रस्तो तास प्रोक्तं ॥

खनं वहु हिरन्न च पसवी दास पोरुसं॥ चर्तार काम खर्भाण, तह से हववनप् ॥ १९॥

मित्तवं नाइव होइ, ज्ञागोए य वसव ॥ अप्पायंके महापने, अजजाये जसा वसे ॥ १०॥

झप्पायक महापन, अजजाय जला वल ा १७॥ खुद्या माणुस्तए ऋष्, अप्यक्तिरूवे अहास्तर्य ॥ पुत्र विसुद्ध सद्धरमे, केवल बोहि बुद्धिया ॥ १७॥

धुव विद्युक्त सक्ष्मम्, कवल वाहि बुख्यया ॥ १७॥ चन्नरंगं ख्रुख्खहं नद्या, संजर्म पिक्विज्ञिया ॥ तवसा ध्रुय कम्मसे, सिद्धे हवए सासए निवोमि ॥

धुय कम्मंसे, सिद्धे हवए सासए ति वोमे श्रसंखय जीविय मा पमायए, जरोवणीयस्स हु नित्त ताणं ॥ एवं वियाणाहि जणे पटमचे ॥ किं नु विहिंसा श्रजया गहिति ॥ १ ॥ उचराध्ययनतुं चोथुं अध्ययनः (३३)

ः जे पावकम्मेहिं घणं मणुसा, समाययंती श्रमयं गहा यू ॥

् पद्दाय ते पास प्यहिए नरे,

वेराणुवद्धा नरयं जविति ॥ १ ॥ तेणे जहा संधिमुहे गहीए,

स कम्मुणा किन्दर पावकारी ॥

एवं पया पेच इहं च लोए,

कनाण कम्माण न मोरक अग्नि ॥ ३॥

संसार-भावन्न परस्स अठा, साहार्षां जं च करेड़ कम्मं ॥

ेकम्मस्स ते तस्त उवेग काले, केम्बर कंपनमं जनित

न वंधवा वंधवयं जविति ॥ ४॥ वितेण ताण न खने पमत्ते.

ાયા

वित्तेष ताष न खर्न पमत्ते, इमंमि खोए श्रद्धवा परहा ॥

दीवष्पण्ठेव अषांतमोहे, नेयाज्यं दठु-मदछ-मेव

सुत्ते सुवावि पिन्तुद्धजीवी,

न वीससे पिनय श्राप्तपन्न ॥ घोरा मुहुना श्रवलं सरीरं, **(**₹४) तृटक अध्ययनो, न्नारंमपकीव चरे उप्पमत्तो

चरे पयाई परिसंक्माणी. जं किंचि पास इह मन्नमाणो ॥

11 & 11

सानतरे जीविय बृहङ्सा, पन्ना परिन्नाय मखावधंसी 11 9 11 ठदं निरोहेण उवेश मोरकं, श्रासे जहा सिक्सिय वम्मधारी ॥

प्रहाई बासाई चरे उपमत्ती. तम्हा मुणी खिप्प-मुबेइ मोरकं ॥ ए॥

स पुष--मेव न खनेड्स पहा, पसोवमा सासयवाइयाण ॥ विसीयई सिढिखे आज्यंमि

कास्त्रोवणीय सरिरस्स ज्ञेष ॥ ए॥ खिप्प न सकेइ विवेग-मेर्ज तम्हा समुठाय पहाय कामे

सम्मेच लोगं समया महेसो. श्रापाण रकीच चरे उपमत्तों ॥ १०॥ मुह मुहं मोहगुणे जयंत. अधोगरूवा समर्थ चरंत ॥

उत्तराध्ययनतुं पांचम् अध्ययन. (રૂપ) फासा फ़संति श्रसमंजसं च, न तेसु जिल्लु मणसा पर्ससे ॥ १९ ॥ मदाय फोसा वहु खोइणिका, तहपगारेसु मणं न कुद्धा ॥ रकें के कें विषय का माणं, मायं न सेवेजा परेजा खोहं ॥ ११ ॥ जे संख्या तुश्च परप्पवाई, ते वेद्ध दोसाणुगया परसा ॥ ए ए अह-म्मोत्ति जगतमाणा कंखे ग्रेषे जाव सरिरस्त जेन ति वे मि ॥१३॥

श्रव्यवेसि महोहंसि, एगे तिवे इत्तरे ॥ तज्ञ एगे महापन्ने, इमं पएह-मुदाहरे 11 8 11 संतिमेय द्ववे गणा, श्रकाया मार्गितया ॥

श्रकाममरण चेव, सकाममर्णं तहा n z n वालाएं श्रकामं तु मरएं श्रसय प्रवे॥ पंक्याणं सकामं तु, उक्कोसेण सबं जाने 11 🗦 11

तिहमं पढमं ठाण, महावीरेण देनियं ॥ काम गिद्धे जहा वाले, जिस कुराई कूदर्र जे गिद्धे कामनोपेष्ठ एगे कूनाय गद्ध ॥ ՄՁ դե

(३६) वृटक अध्ययनो न मे दिष्ठे परेलोए, चरख़दिष्ठा इमा रई ॥ ५॥ हजागया इमे कामा, काहिया जे व्यवागया ॥ को जाणइ परेसोए, श्रित्त वा नित्त वा पुणी ॥ ६ ॥ जरेाण सिद्ध होस्कामि इ इ वाले पगप्रई ॥ कामचोगाणुराएण, केसं सपिनवजाई 11 9 11 तर्र से दंग समारजङ, तसेस थावरेस या। **घटाए य घण्टाए, जुयगाम विहिस**ई 11 0 11 हिसे बाले मुसाबाई, माइल्ले पिस्रणे सह ॥ जजमाणे सुरं मसं सेय-मे यति मन्नई 11 12 11 कायता वयसा मत्ते, तित्ते गिर्द्धे अ एशिसु ॥ हुइर्ड मलं सचिणुइः सिधुनागोव महियं 11 80 11 तर्र पुट्टा आयर्रेण, गिलाणी परितप्पर्ड ॥ पन्नी व रखोवस्त, कम्माण्ये हि खण्णो ॥ ११ ॥ स्रया मे नरप ठाषा, असोलार्थ जागई ॥ 🕠 बालाएं क्रकम्माण, पगाडा जञ्च वेयणा ॥ १२ ॥ तहीववाइयं ठाण, जहा मे त-मणुस्सुय ॥ ब्रहाकम्मेहिं गछतो, सो पछा परितप्पई 11 88 11 जहा सागिमे जाण, सम्मं हिचा महापहं ॥ . सग्ग मोइहो, अरके जग्मिस सोयई ॥ १४ ॥

एव धम्म वित्रक्रमा, श्रहम्मं पिनविज्ञिया ॥ वाले मञ्जू मुई पत्ते, ऋके ज्ञागेव सोयई ॥ १५ ॥ तर्र से मर्णतंमि, बाले सतस्सई जया ॥ थकाममरणं मरइ, धुत्तेव कलिणा जिए ॥ १६॥ एवं श्रकाममरणं, बाखाणं तु पवेइयं ॥ पत्तो सकाममरणं, पिनवाणं सुषेह मे ॥ १९ ॥ मरणपि सपुन्नाणं, जहा मे त-मणुस्तुय ॥ विष्पसन्न-मणाधायं, सजयाणं वसीमर्ज ॥ १०॥ न इमं सबेसु जिस्कृतु, न इमं सबेसु गारिसु॥ नाणासीखा व्यगारज्ञा,विसम सीखा य जिल्लुणो॥१ए॥ सति एगेहि जिल्लुहि, गारम संजमुत्तरा ॥ गारहेहि य सबेहि, साइवो संजमुत्तरा ॥ २०॥ चीराजिएं नगिविएं, जमी संघामि मुंनिए ॥ प्याणिवि न तायंति, ह्वस्तीख परियागय ॥ ११ ॥ र्षिमोखएव इस्सीखे, नरगार्च न मुचई ॥ न्निकाए वा गिइने वा, सुवए कम्मइ दिवं ॥१२॥ श्चगारि सामाइयंगाई, सद्दी काएण फासए॥ पोसह छुहर्र पर्कं, एग राइ न हावए॥ १३ एवं सिका समावने, गिह्वासीवे सुबए ॥

(३७) नृटक अध्ययनो मुचइ ठवि पवार्छ, गर्छ जस्क संबोगयं ॥ श्रह जे सबुरे निरखु, छुन्हं श्रन्नयरे सब दाक प्पडीणे वा, देवे वावि म उत्तराइ विमोद्दार, जुरमताणु पुत्रसी । समाइन्नाइ जर्केहिं, श्रावासाइ ज्ञ दीहालया इहिमेता, समिद्धा श्रहुणोववत्र सकासा, जुज्ञो श्रन्धि ताणि गणाणि गज्ञति, सिकिसा जिस्काए वा गिइडे वा, जे सति

तााष ठाषा। प्रभात, स्तास्कता जिस्काप वा गिहुष्टे वा, जे सित तेित सोचा सपुक्काण, । न संतप्तित मरखते, सीखवता द्विद्विया वितेस—मादाय, । वित्यसीइक्त मेहावी, नहा अ तर्ड काले श्र्याप्येष, सही विष्यस्क्र लोमहरिसं, चेय झह कालि सप्ते, अ। सकाममर्ख मरइ, तिष्ह

जावति ऽविज्ञा पुरिसा सर्वे वहुसो मुद्रा, ससा

उत्तराध्ययनन् इद्वं अध्ययन. समिरक पंनिए तम्हा, पास जाइपहे वह ॥ अपूषा सच-मेसेना, मित्तिं नृष्सु कर्पेष ॥ १॥ माया पिया न्हुसा, जाया जजा पुत्ता य र्रुसा ॥ नाखं ते मम तालाय खुव्यं तस्स सकम्मुणा ॥ ३ ॥ एय मर्छ सपेहाए, पासे समियदंसखे ॥ विंदे गेहिं सिणेहं च, न कंखे पुत्र संघवं 11 8 11 गवासं सणिक्रमलं, पसवो टास पोहस ॥ सब मेय चइनाण, कामरूवि जविस्तति 11 U 11 यावरं जगमं चेव, वण धन्नं ठवस्कर ॥ पद्मनाणस्स कम्मोहि, नाल इस्कान मोयणे ાદ્ય श्रदाई सवृत्तं सव, दिस्स पाणे विचायए ॥ न हुणे पाणिणो पाणे, जय वेराठ जवरण 11 9 11

न इषे पाषिणो पाषो, जय वेरान जनरए ॥ ॥ ॥ श्रायाण नरपं दिस्स, नायइन तणामिव ॥ दोग्रंडी श्रप्पणो पाए, दिन्न ज्रनेन जोयणं ॥ ए ॥ इह-भेगेन मर्ज्ञात, श्रपचस्काय पानगं ॥ श्रायरिय विदित्ताणं, सन दुस्का विमुचई ॥ ए ॥ जणता श्रकरिंता य, वंध मोस्क पत्रनिणो ॥ वाया विरियमिनेण, समातासंति श्रप्पग ॥ १० ॥ न विना तायए जासा, कर्न विज्ञाणुसासणं ॥

त्रटक अध्ययनो (३७) मुच्चर ठवि पवार्ज, गर्छे जस्क संखोगयं ॥ ए। ॥

श्रह जे सबुने जिरसू, इन्हं श्रन्नयरे तिया॥ सब दुरक प्पड़ी थे ना, देने नानि महिहिए ॥ १५॥ **उत्तराई** विमोहाई, जुङ्मताणु पुत्रसा ॥

समाइन्नाई जरकेहि, आवासाइ जसंसिणी ॥१६॥ दीहाज्या इहिमता, समिद्धा कामरूविणे।।।

श्रहुणोववत्र सकासा, जुज्जो श्रचिमालिप्पन्ना ॥१॥ ताणि वाणाणि गद्यति, सिक्किसा सजम तव ॥ जिस्काप वा गिइछे वा, जे सति परिनिब्दुमा ॥२०॥

तेसिं सोचा सप्रज्ञाण, सजयाण वसीमर्ज ॥ न संतत्ति भरणते, सीखवता बहुस्सुया ॥ १ए ॥ त्रक्षिया विलेस-मादाय, दयाधम्मस्स खतिए ॥

विव्वसीइज मेहावी, तहा जूपण खप्पणा ॥३०॥ तर्र काले अनिष्पेए, सही तालिस-मंतिए॥ विषाएक लोमहरिस, नेय देहस्स कराए ॥ ३१ ॥ श्रह काछमि संपत्ते, श्राघाया य समुस्सय ॥ सकाममरण मरइ, तिण्ह -मन्नयरं मुणि ति वेमि।३१। जावति ऽविद्धा पुरिसा सबे ते छुक्तसन्नवा॥ व्यवंति बहुसी मूढा, ससारंमि अणतमे ॥ १॥

उत्तराध्ययननुं हदुं अध्ययन. (३ए) समिक पंभिए तम्हा, पास जाइपहे वह ॥ श्रापणा सञ्च-मेसेजा, मित्तिं जूपस कप्पेप ॥ १॥ माया पिया न्हुसा, जाया जजा पुत्ता य र्जरसा ॥ नालं ते मम ताणाय हुप्पं तस्त सकम्मुणा ॥ ३ ॥ एय मर्ड सपेहाए, पासे समियदंसखे ॥ हिंदे गेहि सिणेहं च, न कंखे पुद्व संयव 11 8 11 गवासं मणिकुमलं, पसवी वास पोरुस ॥ सब भेयं चइताण, कामरूवि जविस्तति ાયા थावरं जगमं चेव, घण धन्नं जबस्करं ॥ पद्माणस्स कम्मेहि, नाल हुखाउ मोयणे 11 & 11 श्रदार्व सद्य सद, दिस्स पाणे वियायए ॥ न हुणे पाणिणो पाणे, जय वेरान उवरप 11 9 11 श्रायाणं नरयं दिस्स, नायइज्ञ तणामवि॥ दोग्रंठी खप्पषो पाप, दिन्नं जुंजेन नोयस ॥ ७ ॥ इद-मेगेन महाति, अपश्चाकाय पावगं ॥ श्रायरियं विदित्ताण, सत दुस्का विमुचर्छ ॥ ए ॥ जणता श्रकरिता य, वंध मोस्क पर्जिली ॥ वाया विरियमिनेण, समाप्तासंति अप्पर्ग ॥ १०॥ न चिना तायए जासा, कड विज्ञाणुसासण ॥





जे केइ सरीरे सत्तां, वझे रूवे य सबसो ॥ मणसा काय चकेणं, सबे ते हुस्क संजवा ॥ १२ ॥

श्रावन्ना दीह-मद्धाण, संसारंमि श्रर्णतए॥ सन्दा सब दिस पस्स, श्रप्यमत्तो परिवय ॥ १३॥

बहिया छहु-मादाय, नावकंखे कपाइवि ॥ पुरुकम्म खयठाए, इस देहं समुद्धरे ॥ १४ ॥

विभिन्न कम्मुणो हेन्छ, कालकंद्यी परिवृष् ॥ मार्ष विकस्त पाणस्स, कर्म लध्यूण जस्कए॥ १५ ॥

माय प्रकार पांचरत, कम तन्धूय अस्कर्ण र प सिनिहिं च न कुवेज्ञा, तेवमायाइ संजप् ॥ एकी पत्त समादाय, निरविस्को परिवर्ण ॥ १६ ॥

प्सपासिम् छड्जू, गामे छाशियत चरे॥ क्ष्यायमत्तो पमत्तेहिं विम्हाय गवेसए ॥ १७॥ (काव्यम्) एवं से तराहु छाणुत्तर नाणी,

एवं से चदाहु अणुनर नाली, श्राणुनर दंसी अणुनर नाल दसल घरे ॥ श्रारहा नायपुने ज्ञयन, वेसाबिए विचाहिए नि वेमि ॥ १०॥

वसाविद् । प्याहर । व वाम

t ll

